B.Ed I^st year

Subject :- Teaching of Social science

Topic :- Bloom Taxonomy Next Part

* भावात्मक पक्ष *

बालक के व्यवहार का भावात्मक पक्ष उसकी रुचियो, संवेगो तथा मनोवृत्तियो से सम्बन्धित होता है।
डेविड आर० क्रेथवाल, बी०एस० ब्लूम एवं बी० बी० मेसिया ने सन् 1964 मे भावात्मक क्षेत्र के लक्ष्यो को छः उपभागो मे विभाजित किया है।

भावात्मक पक्ष

- ग्रहण करना / आग्रहण
  - सुनना
  - स्वीकारना
  - छाँटना
  - ग्रहण करना
  - प्रत्यक्षीकरण
  - चाहना
- अनुक्रिया
  - उत्तर देना
  - विकसित करना
  - सारणीकरन
  - छाँटना
  - लिखना
  - कथन
- अनुमूल्यन
  - स्वीकारना
  - पहचानना
  - भाग लेना
  - प्रमाणित करना
  - इंगित करना
  - निर्णय लेना
- धारणा
  - विभेदीकरण
  - सम्बन्ध स्थापित करना
  - विश्लेषण
  - प्रदर्शित करना
  - इंगित करना
  - तुलना
- व्यवस्थापन
  - सह-सम्बन्ध स्थापित करना
  - निर्णय करना
  - छाँटना
  - संगठित करना
  - ज्ञात करना
  - बनाना
- चरित्र का अंग बनाना / चारित्रिकरण
  - पुनरावृत्ति
  - विकसित करना
  - परिवर्तन
  - प्रदर्शित करना
  - स्वीकारना
  - पहचानना

1 ग्रहण करना / आग्रहण

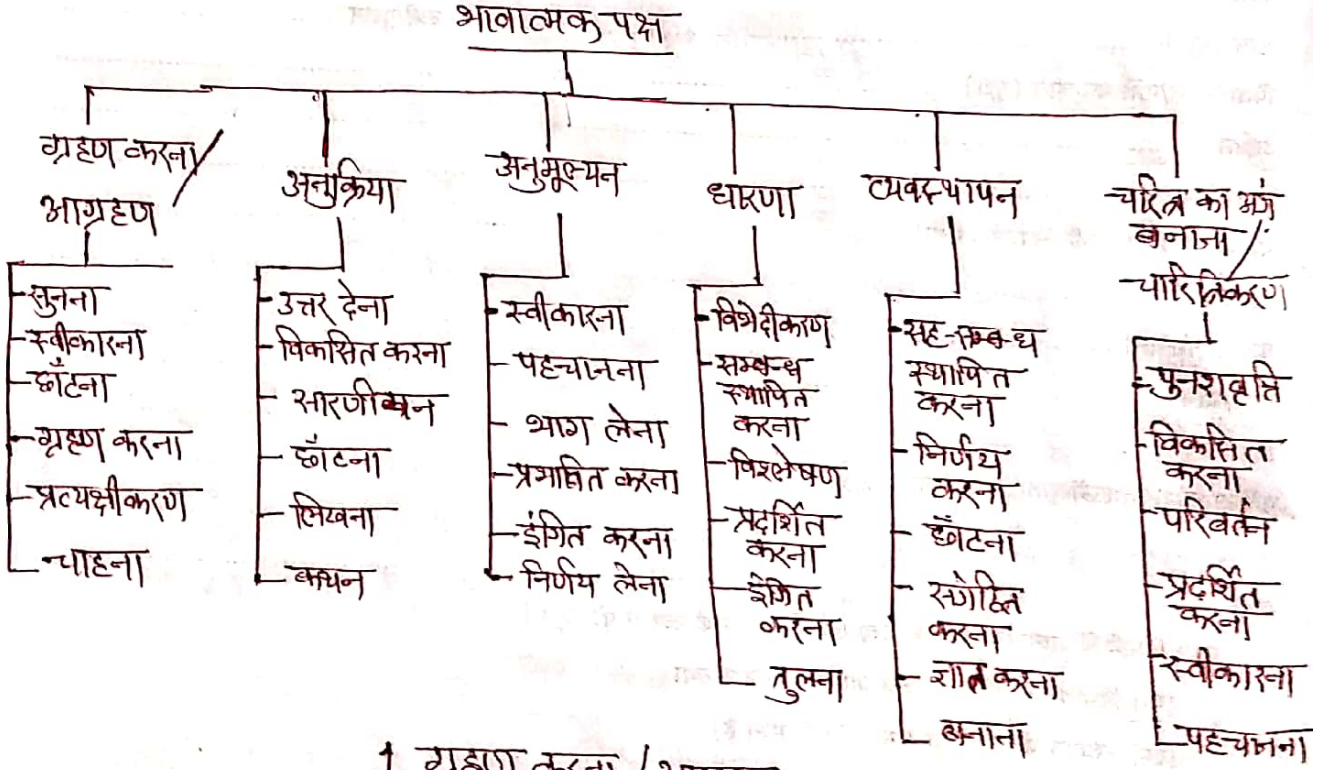

यह किसी उद्दीपक की उपस्थिति मे संवेदनशीलता से सम्बन्धित है। इसके तीन स्तर है – (i) चेतना
(ii) ग्रहण करने की चाह
(iii) नियन्त्रित आकर्षण।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

2 अनुक्रिया

यह भावात्मक पक्ष का दूसरा स्तर है। इसके भी तीन स्तर होते है - (i) प्रतिक्रिया मे सहमति
(ii) प्रतिक्रिया की इच्छा
(iii) प्रतिक्रिया मे सन्तोष ।

3 अनुमूल्यन

इसका सम्बन्ध मूल्यो के प्रति आस्था से है। इसके अन्तर्गत विशिष्ट मूल्यो के प्रति स्वीकृति प्राथमिकता व निष्ठा आती है। इसके भी तीन स्तर होते है - (i) किसी मूल्य की स्वीकृति
(ii) मूल्य के प्रति अधिक लगाव
(iii) मूल्य के प्रति प्रतिबद्धता ।

4 धारणा/अवधारणा

मूल्यो की विविधता के परिणामस्वरूप स्वीकार किये गये मूल्यो के प्रति एक निश्चित धारणा बनाने के लिए प्रत्यय निर्माण इसके अन्तर्गत आता है।

5. व्यवस्थापन

इसके अन्तर्गत निश्चित किये हुए मूल्यो पर विचार किया जाता है तथा उसको व्यवस्थित रूप दिया जाता है। इसके दो अंग होते है — (i) मूल्य प्रणाली का धारण करना
(ii) मूल्य प्रणाली का संगठन करना ।

6 चरित्र का अंग बनाना/चरित्रीकरण

जो भी मूल्य ग्रहण किये जाते है उन्हे चरित्र का स्थायी अंग बनाया जाता है। इसके दो अंग होते है।
(i) सामान्यीकृत समुच्चय
(ii) चरित्रीकरण या विशेषीकरण

P.T.O.

Scanned with CamScanner

* क्रियात्मक पक्ष *

हमारे व्यवहार का क्रियात्मक पक्ष गतिवाही कौशल तथा ऐसी क्रियाओं में प्रकट होता है जिनके लिए हमारी मांसपेशीय एवं आंगिक गतियों की आवश्यकता होती है।

क्रियात्मक क्षेत्र को प्रो० ब्लूम ने ~~मनोशक्तिक~~ की संज्ञा दी और इसे अन्तिम क्रम में रखा।

अर्थात (ज्ञानात्मक पक्ष में) ज्ञान ग्रहण करने के बाद, (भावात्मक पक्ष) में सोच समझ कर, (क्रियात्मक पक्ष) कार्य करने पर बल दिया जाता है।

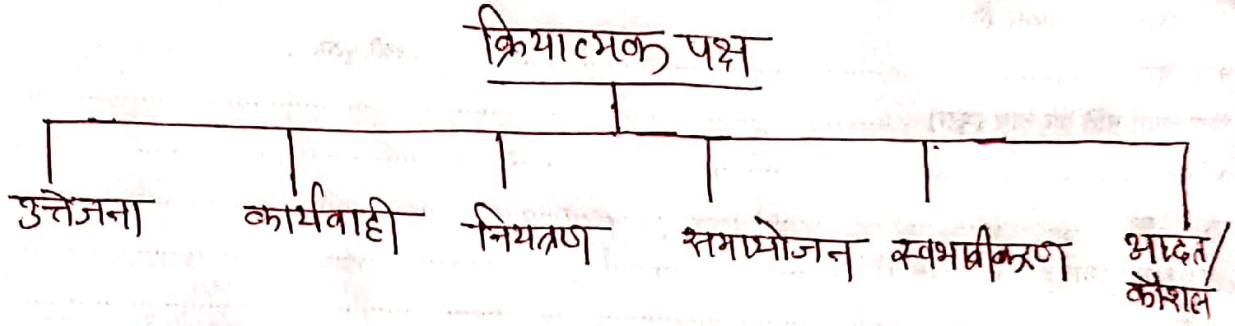

1 उत्तेजना.

* इसमे कार्य के प्रति उत्तेजना लायी जाती है।

2 कार्यवाही

* इसमे बालक उत्तेजना के आधार पर गत्यात्मक क्रिया सम्पादित करता है।

3. नियंत्रण

* इसके द्वारा बालक अपनी क्रिया को साधता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

4. समायोजन

* इसमे कई क्रियाओ पर नियन्त्रण के आधार पर उनके मध्य समायोजन लाया जाता है।

5. स्वाभाविकरण

* इसके अन्तर्गत कार्य करते रहने की शैली बन जाती है तथा कार्य एक विशेष गति एवं ढंग से सम्पादित होता है।

6. आदत अथवा कौशल

* इसके अन्तर्गत कार्य करने की शैली एक आदत बन जाती है।

NOTE:- ई० जे० सिम्पसन ने क्रियात्मक पक्ष के निम्न स्तर बताये है।

क्रियात्मक पक्ष
- प्रत्यक्षीकरण
  - निर्मित करना
  - रेखाचित्र खीचना
- व्यवस्था
  - पारूप बनाना
- निर्देशात्मक अनुक्रिया
  - पहचानना
  - स्थापित करना
- कार्यप्रणाली
  - मरम्मत करना
  - अभ्यास करना
- अधिक प्रत्यक्ष अनुक्रिया
  - जोड़ना
  - सृजन
  - परिवर्तित करना

by
Mr. Parveen Roy
B.R.C. Deoband (SRE)

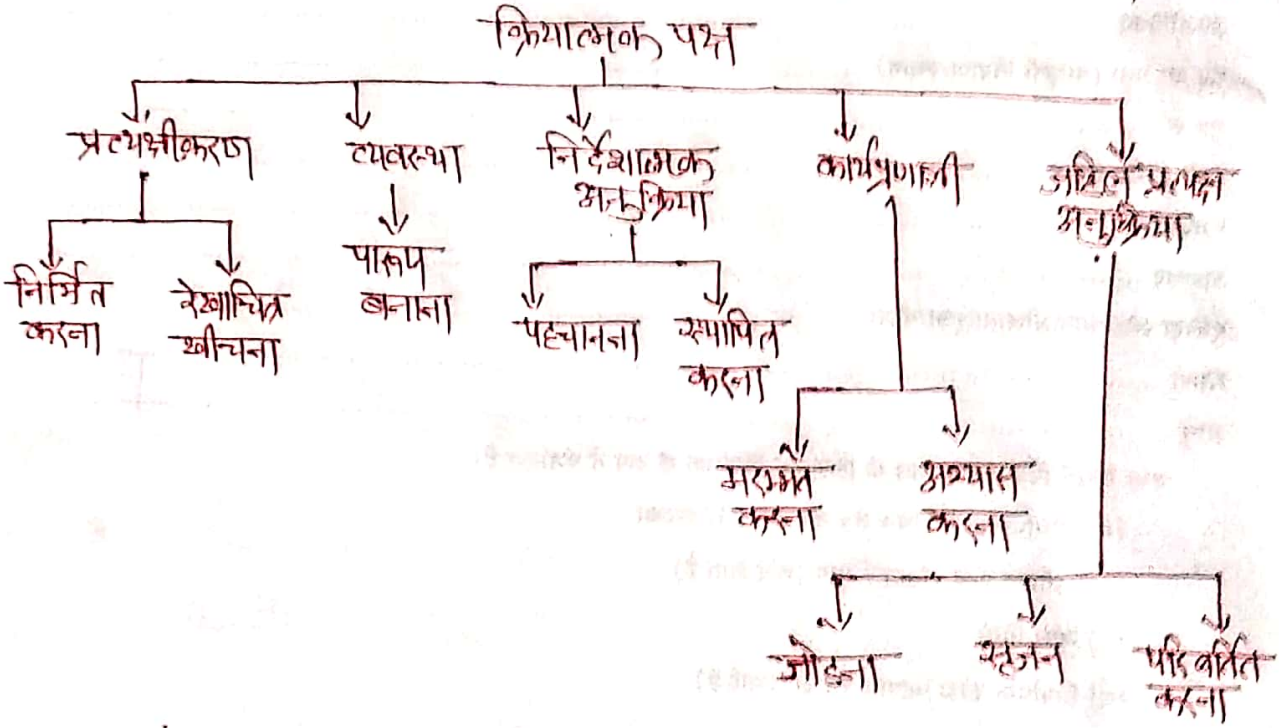

Thankyou